

गुडैर (von गुड) m. Mundvoll, Bissen U. 1, 58. Auch गुडैरक m. H. 423.

गुडोद्वा (गुड + उद्वा) f. Zucker Rāṅ. im ÇKDr.

गुण 1) m. a) der einzelne Faden einer Schnur; Schnur, Strick überh. AK. 2, 10, 27. TRIK. 3, 3, 125. H. 928. = तत्तु VAIḠ. beim Sch. zu Çiç. 1, 62. = तत्तु und रज्जु H. an. 2, 138. fg. = वटी und रज्जु MED. p. 10. fg. प्रुत्वं कृत्वा त्रिः परिहृत्य गुणेषु प्रुत्वात्मवक्ष्याम्य LAUGĀKSHI beim Sch. zu KĀTJ. Ç. 1, 3, 23. त्रिगुणा मौञ्जी aus drei Fäden bestehend KUMĀRAS. 3, 10. रसना-गुणास्पदम् ebend. आसञ्जयामास यथाप्रदेशं काष्ठे गुणम् RAGH. 2, 83. विद्यु-दुणवद्धक्ताः (वारिधराः) MĀKĀH. 84, 13. हेमकाञ्चीगुण MĀLAY. 56. MEGH. 29. मुक्तागुण 47. गुणवद्ध Strick und Vorzüge VID. 277; vgl. unten u. i. — Insbes. α) Bogensehne AK. 2, 8, 2, 53. 3, 4, 12, 49. TRIK. 2, 8, 51. H. 776. H. an. MED. VAIḠ. चाप° R. 3, 33, 16. HIT. 1, 158. RAGH. 9, 54. RT. 6, 1. In der Geom. die Sehne COLEBR. Alg. 89. — β) Saite: वल्लकी° Çiç. 4, 57. — b) am Ende eines adj. comp. (f. घ्रा) nach einem Zahlworte: — fach, — plez, — πλος (urspr. aus so und so vielen Fäden d. i. Theilen bestehend). Diese Bed. ist mit आवृत्ति Wiederholung MED. und VAIḠ. gemeint. रज्जु त्रिगुणे dreifach ÇĀKṢH. Ç. 17, 2, 3. KĀTJ. Ç. 6, 3, 15. 22, 4, 26. (वासः) द्विगुणं वा चतुर्गुणं वा zweifach oder vierfach zusammengelegt ÇAT. BR. 3, 3, 2, 9. तस्मादयमात्मा द्विगुणो बहुलतर इव doppelt so dick 8, 7, 2, 10. द्विगुणान्कुशान् zusammengesfaltete Kuca - Halme JĀṢ. 1, 232. द्विगुणा दन्तिणा doppelt KĀTJ. Ç. 22, 9, 2. द्विगुणं तैलं पच्यते तीरेणा zwei Theile Oel mit einem Theile Milch P. 5, 2, 47. Sch. षट्परा द्विगुणाश्चः mit sechs Köpfen und doppelt so vielen Ohren MBu. 3, 14316. आक्षरो द्विगुणः स्त्रीणां बुद्धिस्तासां चतुर्गुणा। पद्मो व्यवसायश्च कामश्चाष्टगुणः स्मृतः॥ KĀN. 78. सप्त त्रिगुणानि दिनानि 21 Tage RAGH. 2, 25. मूल्यात्यन्तगुणो दण्डः eine Strafe im fünffachen Betrage des Werthes M. 8, 289. 243. 322. 329. JĀṢ. 2, 4. 11. 257. इन्द्राच्छतगुणः शौर्यं hundred Mal tapferer als Indra MBu. 1, 1449. ततः शतगुणो बने R. 6, 95, 11. दायो तद्विगुणं दम् M. 8, 59. 139. adv.: दर्भान्द्विगुणमुमान् ĀÇV. GRUJ. 4, 7. डष्टा दशगुणं पूर्वात्पूर्वदिते यथाक्रमम् zehn Mal schlechter JĀṢ. 1, 141. R. 1, 77, 27. 3, 22, 15. 5, 3, 30. PĀKĀT. 163, 4. compar.: तत्प्रतिशब्देन द्विगुणतरो (= द्विगुण) नादः कृपात्समुत्थितः 37, 15. nom. abstr.: तृ-ल्ला ततः प्रभृति मे द्विगुणवमेति verdoppelt sich ĀMAR. 68. In Verbind. mit भू und कर्ः शतगुणीभूतं verhundertfacht VID. 303. द्विगुणीकृत Çiç. 1, 63. द्विगुणीकृर zwei Mal pflügen P. 5, 4, 59. Ausnahmsweise erscheint गुण in dieser Bed. auch ausserhalb des comp.: द्वा गुणौ तीरस्थैकतैलस्य zwei Theile Milch, ein Theil Oel P. 5, 2, 47. Sch. पाण्डुरोक्तं नवद्वारं त्रिभि-गुणेभिर्वातम् dreifach verhüllt AV. 10, 8, 43 (vgl. 2, 29. 32. KĀND. UP. 8, 1, 1). विधिपञ्चाङ्गपयसो विशिष्टो दशभिर्गुणैः zehn Mal mehr werth M. 2, 85. मासैर्दशभिर्गुणैः। ऋतुर्मनूनां संप्रोक्तः in zwölffacher Anzahl HARIV. 309. An diesen Gebrauch des Wortes schliesst sich unmittelbar die Bed. — c) Multiplikator, Coefficient COLEBR. Alg. 29. 170. — d) Abtheilung, Art: गन्धस्य गुणान् die verschiedenen Arten des Geruches MBu. 12, 6847. यदा शस्यगुणोपेतं परराष्ट्रं तदा वनेत् mit verschiedenen Arten von Getreide versehen (Str.: mit Getreide und Hilfsmitteln) JĀṢ. 1, 347. — e) ein untergeordnetes Element; ein untergeordneter, unwesentlicher Theil einer Handlung, Hilfsact, = अग्रधान oder अमुष्य H. 1441. H. an. (प्र-

धान). MED. VAIḠ. कृतस्यानावृत्तिर्गुणलोपे ÇĀKṢH. Ç. 3, 20, 16. सगुणानां ह्येव कर्मणामुद्धार उपज्ञानो वा ĀÇV. Ç. 12, 4. KĀTJ. Ç. 4, 4, 17. 3, 13. 6, 1. 5. नामफलगुणयोगात्कर्मात्तरम् 4. 4, 2. अर्कणं गुणार्थमुत्तरवेद्यमिनिधा-नात् 5, 4, 6. कालगुणभेदात् 6, 7, 28. 8, 1, 9. सर्वगुण adj. auf alle untergeordneten Theile sich erstreckend, durchweg gültig 1, 3, 28. (कलौ) वैदि-कानि च कर्मणि भवन्ति विगुणान्युत MBu. 12, 2689. (कृतपुगे) वैदिकानि च सर्वाणि भवन्त्यपि गुणान्युत 2677. Sollte hier nicht viell. अयिगुणानि als comp. (im Gegens. zu विगुणानि oben) im Verein mit den Nebenhandlungen aufzufassen sein? Auf diese Weise würde auch das anstössige neutr. entfernt werden. उपावृत्तस्य पयोभ्यो यस्तु वासो गुणैः (d. i. सर्वभूतेषु दया, क्षान्ति, अनसूया, शैव, अनयास, मङ्गल, अकार्पाय, अस्पृहा) स-ह। उपवासः स विज्ञेयः सर्वभोगविवर्जितः॥ EKĀDĀRITATVA im ÇKDr. u. उपवास. — f) eine untergeordnete Speise (im Gegens. zu अन्न Reis, der Hauptspeise), Nebengericht, Beigericht: पाणिभ्यो तूपसंगृह्य स्वयम-न्नस्य वर्धितम्। विप्रास्तिके पितृन्ध्यायन् शनैरुपनिनितेत्॥...॥ गुणाश्च सूपशाकाद्यान्पयो दधि घृतं मधु। विन्यसेत्प्रपतः पूर्व भूमावेव समाहितः॥ M. 3, 224. 226. 228. अन्नाद्येनासकृच्चैतान्गुणैश्च परिचादयेत् 233. Vgl. गुण-कार. — g) Eigenschaft (der wandelbare und daher unwesentliche Theil an den Dingen, im Gegens. zur Substanz), Eigenthümlichkeit: नित्यं द्र-व्यमनित्या गुणाः SUÇ. 1, 147, 5. सत्त्वे निविशते ऽपैत पृथग्ज्ञातिषु दृश्य-ते। आधेयश्चाक्रियान्न सो ऽसत्त्वप्रकृतिर्गुणः॥ उपैत्यन्यज्ज्ञातयन्यदृष्टा द्र-व्यातरेष्वपि। वाचकः सर्वलिङ्गानां द्रव्यादन्यो गुणः स्मृतः॥ KĀR. im Ind. zu P. II, 451. Vor. 4, 16 und S. 223. गुणा विशेषाधानहेतुः सिद्धा वस्तु-धर्मः। शुक्लादयो हि गवादिकं सजातीयेभ्यः कृष्णगवादिभ्यो व्यावर्तयन्ति SĪH. D. 10, 13. याव्यश्च प्रवैस्त्रिभिर्गुणैर्व्याख्यातः LĀTJ. 1, 1, 8. ÇĀKṢH. GRUJ. 1, 2. यादृग्गुणेन भर्त्रा स्त्री संयुज्येत यथाविधि। तादृग्गुणा सा भवति समुद्रेणेव निम्नगा॥ M. 9, 22. कथं शक्यामि बाले ऽस्मिन्गुणानाधातुमीप्स-तान् BRĀHMAN. 2, 15. यो यस्यैषां विवाहानां मनूना कीर्तितो गुणः M. 3, 36. रूविर्गुणान् 236. 237. वीजं स्वैर्व्याञ्जितं गुणैः 9, 36. मूर्तिगुण AK. 3, 4, 113. अमर्षः क्रोधसंभवः। गुणो त्रिगीषोत्ताहवान् H. 321. Diese Bed. des Wortes wird umschrieben durch द्रव्याश्रित und शुक्लादि AK. 3, 4, 12. 49. MED. — Insbes. α, die den fünf Elementen und den fünf Sinneswerkzeugen entsprechenden fünf Haupteigenschaften: शब्द Lant (Aether — Ohr), स्पर्श Fühlbarkeit (Luft — Haut), रूप Form, Farbe (Licht — Auge), रस Geschmack (Wasser — Zunge), गन्ध Geruch (Erde — Nase. M. 1, 76—78. 20. MBu. 12, 6846. fgg. ÇĀK. 1. BUḠ. P. 3, 3, 35. AK. 3, 4, 113. 67. = रूपदि H. an. MED. = शब्दादि VAIḠ. — β) die drei Grundeigenschaften alles Seienden, auf deren geringerm oder stärkerm Vorwalten die Stufenleiter der Wesen beruht: सत्त्वं das wahre Wesen, रजस् Drang, Leidenschaft, तमस् Finsterniss. सत्त्वं रजस्तमश्चैव त्रीन्विद्यादा-त्मनो गुणान्। यैर्व्याप्येमान्स्थितो भावान्महान्सर्वानशेषतः॥ M. 12, 24, 25. 30. fgg. 1, 15. 3, 40. सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसेभवाः। निवर्धन्ति म-हाबद्धो देहे देहिमव्ययम् (wobei der Dichter zugleich an die Bed. Schnur gedacht hat)॥ BUḠ. 14, 5. 21. 13, 19. SĀKṢH. 11. fgg. VP. 34. AK. 1, 1, 4, 7. 3, 4, 12, 49. H. an. MED. VAIḠ. गुणाग्र्य = सत्त्वं RAGH. 3, 27. Daher गुण in der Bed. von drei gebraucht VARĀH. BRH. S. 97, 1. Vgl. त्रै-गुण्य. — h) Beiwort, Epitheton: सगुणास्थनि ऽगुणः KĀTJ. Ç. 6, 7, 23. आ-ग्नेयौ वायानुवाक्ये निर्गुणे Sch. ebend. निर्गुणः प्रेष्यप्रेषः स्विकृत्यागः